

---

# Shri Pragajibhaktamahima Ashtakam

श्रीप्रागजिभक्तमहिमाष्टकम्

## Document Information

---

Text title : Shri Pragajibhaktamahima Ashtakam

File name : prAgajIbhaktamahimAShTakam.itx

Category : deities\_misc, svAminArAyaNa, gurudev, aShTaka

Location : doc\_deities\_misc

Author : yajnapuruShadAsajImahAraja

Acknowledge-Permission: Swaminarayan Sampradaya

Latest update : August 8, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 9, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Pragajibhaktamahima Ashtakam

---

### श्रीप्रागज्जिभक्तमहिमाष्टकम्

---



(रथोद्धृता छन्द)

ज्ञानधर्म-सुविरक्ति-शालिनं  
श्रीहरौ रतिविशिष्ट-मानसम् ।  
धर्मयुक्त-पुरुषाधिक-प्रियं  
प्राञ्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ १ ॥

ब्रह्मरूप-मभिलार्थदं विभुं  
योगयुक्त-मुरुपुण्य-सङ्गतम् ।  
स्वप्रताप-निहताभिलासुरं  
प्राञ्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ २ ॥

दिव्यनिर्गुण-मनोरमाकृतिं  
नैककोटि-रविचन्द्र-भासुरम् ।  
द्रष्टमात्र-नरनाटकं सदा  
प्राञ्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ ३ ॥

अक्षराधिपति-तुल्यतां गतं  
स्वान्तरे ङि हरिमूर्तिदर्शितम् ।  
सर्वज्ञव-दृढ्यस्थ-वेदनं  
प्राञ्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ ४ ॥

जन्ममृत्यु-भवबन्धमोक्षाणं  
प्राजयशिष्य-शुचिबोधकं मुदा ।  
स्वाश्रितामितजनैः सुपूजितं  
प्राञ्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ ५ ॥

कृष्णशासन-विलम्बनारुचिं  
दृष्टलोक-विकृतानय-क्षमम् ।  
मानमत्सर-नरा-विबोधितं

प्राञ्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ ६ ॥

छन्द्रेयाश्र-विजितं क्षमाभृतं  
कामदोष-दहनं पट्टं भृशम् ।

निर्निमेष-नयनं परापहं

प्राञ्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ ७ ॥

भूरि कोमलसुधा-समाक्षरं

द्रविलास-लृत-भक्तयेतसम् ।

नीलकण्ठ-सुततुल्य-विग्रहं

प्राञ्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ ८ ॥

(शादूलविक्रीडितम्)

श्रीमन्निर्गुण-मूर्तये य विभवे ज्ञानोपदेष्टे सदा

सर्वज्ञाय समग्र-साधुगुणिने मायापराय स्वयम् ।

सर्वैश्वर्यवते निजाश्रितजनानां दोषहर्त्रे य मे

प्राञ्जित्-सद्गुरवे नमोस्तु सततं ब्रह्मात्ममुक्तायते ॥ ९ ॥

छति स्वामी यज्ञापुरुषदासञ्जमहारजविरचितं

श्रीप्रागञ्जलभक्तमडिमाष्टकं सम्पूर्णम् ।

---

*Shri Pragajibhaktamahima Ashtakam*

pdf was typeset on August 9, 2024

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

